अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल

समय : 3 घंटा | तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2015) | दिनांक 18.12.2015

चतुर्थ वर्ष : प्रथम प्रश्न पत्र | पूर्णांक – 100

लघुदण्डक – 30

प्र.1 कोई पाँच द्वार लिखें – 20

(क) संहनन द्वार (ख) च्यवन द्वार (ग) इन्द्रिय द्वार (घ) ज्ञान द्वार

(ङ) शरीर द्वार (च) संस्थान द्वार (छ) दृष्टि द्वार

प्र.2 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दें – 10

(क) गति–आगति में भवनपति से लेकर पांच स्थावर तक गति–आगति लिखें।

(ख) असंज्ञी मनुष्य में संहनन, लेश्या, पर्याप्ति, योग, शरीर, संस्थान, वेद, दृष्टि व दर्शन कौन से व कितने पाते हैं?

(ग) युगलियों की स्थिति लिखें।

(घ) दक्षिण दिशि के असुरकुमार देव देवियों, दक्षिण दिशि के नौ निकाय के देव देवियों तथा उत्तर दिशि के असुरकुमार देव देवियों की जघन्य व उत्कृष्ट स्थिति लिखें।

(ड.) अज्ञान द्वार लिखें।

(च) ज्योतिष देवों में चन्द्रमा व सूर्य की स्थिति लिखें।

पांच ज्ञान – 30

प्र.3 किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखें – 25

(क) श्रुतनिश्रित मतिज्ञान के भेदों की चर्चा करते हुए मल्लक दृष्टांत लिखें।

(ख) अवधिज्ञान व मनःपर्यवज्ञान का अंतर लिखें।

(ग) श्रुत के समुच्चय रूप से चार प्रकार में से कालतः भावतः तथा सम्पूर्ण आकाश के अनंत प्रदेश.....सदाकाल उद्घाटित रहता है, तक पूरा करें।

(घ) अनन्तर सिद्ध केवलज्ञान के प्रकारों का नामोल्लेख करते हुए व्याख्यायित करें।

(ङ) अवधिज्ञान के विषयों का उल्लेख करें।

(च) अंतगत व मध्यगत की भिन्नता बताते हुए अनानुगमिक अवधिज्ञान की पूर्ण व्याख्या करें।

प्र.4 किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखें – 5

(क) क्षायोपशमिक अवधिज्ञान किनके होता है?

(ख) निर्णयात्मक ज्ञान की अवस्थिति का नाम क्या है?

(ग) मतिज्ञान मूक है तो श्रुतज्ञान क्या है?

(घ) व्यंजनावग्रह किसे कहते हैं?

(ङ) गमिक श्रुत किसे कहते हैं?

(च) औत्पत्तिकी बुद्धि किसे कहते हैं?

(छ) ऋजुमति मनःपर्यवज्ञानी ऊपर की ओर कितनी दूर तक देखता है?

(गुणस्थान – दिग्दर्शन) गीतिका – 10

प्र.5 कोई दो पद्य भावार्थ सहित लिखें – 8

(क) ''मोह नो उदै.....तामो रे।।'' (ख) ''आयु कर्म.....मिलावै रे।।''

(ग) ''किसा वेद नै.....मेदै रे।।'' (घ) ''दोय भेद.....थायो रे।।''

प्र.6 किन्हीं दो प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें – 2

(क) कौन से गुणस्थान शाश्वत हैं तथा शेष गुणस्थान क्या कहलाते हैं?

(ख) आठ कर्मों का उदय उपशम क्षायक क्षयोपशम निष्पन्न किस–किस गुणस्थान में होता है?

(ग) दसवें गुणस्थान तक कितने कर्मों का बंध होता है?

पूर्व कंठस्थ ज्ञान – 30

प्र.7 सभी प्रश्नों के उत्तर देने अनिवार्य हैं –

(क) पच्चीस बोल – आठवां 'अथवा' अजीव तत्त्व के भेदों के नाम लिखें। 2

(ख) चतुर्भंगी – सत्रहवां 'अथवा' बीसवां बोल। 3

(ग) पच्चीस बोल की चर्चा – उन्नीसवां 'अथवा' तीसरा बोल। 2

(घ) तत्त्व चर्चा – नौ तत्त्व पर आज्ञा अनाज्ञा 'अथवा' छह द्रव्यों पर छह में नौ की चर्चा। 3

(ड.) जैन तत्त्व प्रवेश (प्रथम खण्ड) – रूपी अरूपी द्वार 'अथवा' आत्म द्वार। 3

(च) प्रतिक्रमण – प्रतिक्रमण प्रतिज्ञा 'अथवा' कायोत्सर्ग प्रतिज्ञा प्रारंभ से लेकर छीएणं तक। 3

(छ) कर्म प्रकृति – वेदनीय कर्म की गुणस्थानों में अवस्थिति 'अथवा' अपवर्तना व उदीरणा को व्याख्यायित करें। 3

(ज) बावन बोल – उदय के तैंतीस बोलों में सावद्य कितने? निरवद्य कितने? 4

'अथवा'

चौदह गुणस्थानों में शरीर कितने?

(झ) इक्कीस द्वार – कोई एक बोल लिखें – 4

(i) मनःपर्यवज्ञानी (ii) अभाषक

(ञ) जैन तत्त्व प्रवेश (द्वितीय व तृतीय खंड) – श्रावक गुण द्वार 'अथवा' प्रेष्य प्रतिमा व श्रमणभूत प्रतिमा। 3